हरिकथामृथसार
अनुक्रमणिका तारतम्य संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पॆळुवे
परम भगवध्भक्थरिधनाधरधि कॆळुवुधु

संधि सूचनेः

मानुषॊत्तमविडिदु संकरु
षणन परियंतरदि पॆळिद
अनुक्रमणिकेय पद्यवनु कॆळुवुदु सज्जनरु

श्रीमदाचायर मतानुग
धीमतांवररंघ्रि कमलके
सॊमपानाहरिगे तात्विक दॆवतागणके
हैमवति षण्महिषियर पद
व्यॊमकॆशगे वाणि वायु सु
तामरसभव लकुमि नारायणरिगानमिपे २७-०१

श्रीमतांवर श्रीपतॆ स
त्कामितप्रद स्ॐय त्रिककु
द्धाम त्रिचतुष्पाद पावनचरित चावांग
गॊमतिप्रिय गौण गुरुतम
सामगायनलॊल सव
स्वामि ममकुलदैव संतैसुवुदु सज्जनर २७-०२

राम राअस कुलभयंकर
सामजॆंद्रप्रिय मनॊवा
चामगॊचर चित्सुखप्रद चारुतर चरित
भूम भू स्वगापवगव
कामधॆनु सुकल्पतरु चिं

तामणियु एंदेनिप निजभक्तरिगे सवत्र २७–०३

स्वणवण स्वतंत्र सवग
कणहीन सुशय्य शाश्वत
वण चतुराश्रमविवजित चारुतर स्वरत
अणसंप्रतिपाद्य वायु सु
वणवरहन प्रतिम वट
पणशयनाश्चयतम सच्चरित गुणभरित २७–०४

अगणित सुगुणधाम निश्चल
स्वगतभेदविशून्य शाश्वत
जगदि जीवात्यंतभिन्नापन्नपरिपाल
त्रिगुणवजित त्रिभुवनेश्वर
हगलिरुळु स्मरिसुतलिहर बि
ट्टगल श्रीजगन्नथविट्ठल विश्वव्यापकनु २७–०५